सूरह — एक कहानी

सूरह हूद

हूद

पूरा सफ़र — वो सूरह जिसने उनके बाल सफ़ेद कर दिए —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 11 • 123 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

किताबुन उह्किमत आयातुहू सुम्म फ़ुस्सिलत मिल्-लदुन हकीमिन ख़बीर
1. एक किताब जिसकी आयतें पुख़्ता की गईं फिर तफ़्सील से बयान हुईं, उस ज़ात की तरफ़ से जो हकीम, ख़बर रखने वाला है।

व मा मिन दाब्बतिन फ़िल्-अर्ज़ि इल्ला 'अलल्-लाहि रिज़्क़ुहा
6. और ज़मीन पर कोई जानदार ऐसा नहीं जिसका रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मे न हो।

या बुनय्यर्-कम्-म'अना व ला तकुम्-म'अल्-काफ़िरीन
42. ऐ मेरे प्यारे बेटे, हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों के साथ मत हो।

इन्नल्-हसनाति युज़्हिब्नस्-सय्यिआत
114. बेशक नेकियाँ बुराइयों को मिटा देती हैं।

व मा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाह; 'अलैहि तवक्कल्तु व इलैहि उनीब
88. और मेरी कामयाबी सिर्फ़ अल्लाह से है। उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की तरफ़ रुजू करता हूँ।

फ़स्तक़िम कमा उमिर्त व मन ताब म'अक
112. तो सीधे रास्ते पर क़ायम रहो जैसे तुम्हें हुक्म दिया गया, और वो भी जो तुम्हारे साथ लौट आए।

वो सूरह जिसने उन्हें सफ़ेद कर दिया

बेटा, शुरू करने से पहले आपको जान लेना चाहिए कि नबी ﷺ ने इस सूरह के बारे में क्या फ़रमाया। जब आप से पूछा गया कि आपके बाल सफ़ेद क्यों हो गए, आपने फ़रमाया: **हूद और उसकी बहनों ने मुझे बूढ़ा कर दिया** — और बाज़ रिवायात में आपने ख़ास तौर पर एक आयत का ज़िक्र किया, जिस तक हम आख़िर में पहुँचेंगे।

तो ये सूरह ये जानते हुए पढ़िए कि **इसने मख़्लूक़ में सब से बेहतर के दिल पर बोझ डाला।**

'अलिफ़ लाम रा। किताबुन उह्किमत आयातुहू सुम्म फ़ुस्सिलत मिल्-लदुन

हकीमिन ख़बीर — एक किताब जिसकी आयतें पुख़्ता की गईं फिर तफ़्सील से बयान हुईं, उस ज़ात की तरफ़ से जो हकीम, ख़बर रखने वाला है।'

बेटा, दो मरहले: '**उह्किमत**' — मज़बूत, साफ़, बे-ऐब बनाई गईं; और '**फ़ुस्सिलत**' — फिर तफ़्सील से खोली गईं, फैलाई गईं ताकि तुम समझ सको। **ख़ुद में कामिल, और फिर तुम्हारे लिए खोल दी गईं।**

'**अल्ला तअ्बुदू इल्लल्-लाह** — कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो — **इन्ननी लकुम मिन्हु नज़ीरुंव्-व बशीर** — बेशक, मैं तुम्हारे लिए उस की तरफ़ से ख़बरदार करने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ।'

और फिर, बेटा, उन के लिए एक वादा जो उस की तरफ़ लौटते हैं: '**व अनिस्-तग़्फ़िरू रब्बकुम सुम्म तूबू इलैहि युमत्ति'कुम मता'अन हसनन इला अजलिम्-मुसम्मा — और अपने रब से माफ़ी माँगो फिर उस की तरफ़ रुजू करो, वो तुम्हें एक मुक़र्रर मुद्दत तक अच्छा सामान-ए-ज़िंदगी देगा — व युअ्ति कुल्ल ज़ी फ़ज़्लिन फ़ज़्लह — और हर एहसान करने वाले को उसका एहसान देगा।**'

बेटा, यहाँ **इस्तिग़्फ़ार** और दुनियावी बेहतरी के दरमियान जो रिश्ता बनाया गया वो ग़ौर कीजिए। **माफ़ी माँगना सिर्फ़ आख़िरत का मामला नहीं; क़ुरआन इसे बार बार राहत, रिज़्क़ और आसानी से जोड़ता है।**

'**अला इन्नहुम यस्नूना सुदूरहुम लि-यस्तख़्फ़ू मिन्ह** — ख़ूब सुनो, वो **अपने सीने मोड़ते** हैं ताकि उस से छुप जाएँ — **अला हीन यस्तग़्शून सियाबहुम यअ्लमु मा युसिर्रून व मा युअ्लिनून** — ख़ूब सुनो, **जब वो अपने कपड़ों में लिपट जाते हैं तब भी** वो जानता है जो वो छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं — **इन्नहू 'अलीमुम्-बि-ज़ातिस्-सुदूर** — बेशक, वो सीनों के भेद जानने वाला है।'

बेटा, क्या तस्वीर है: **एक आदमी अपना सीना मोड़ कर अपने कपड़े अपने ऊपर खींच रहा है, गोया वो एक ख़याल छुपा सकता हो।**

और फिर, बेटा, वो आयत जो रिज़्क़ की हर फ़िक्र ख़त्म कर देनी चाहिए:

'**व मा मिन दाब्बतिन फ़िल्-अर्ज़ि इल्ला 'अलल्-लाहि रिज़्क़ुहा — और ज़मीन पर**

कोई जानदार ऐसा नहीं जिसका रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मे न हो — व यअ्लमु मुस्तक़र्रहा व मुस्तौद'अहा — और वो उसके ठहरने की जगह और उसके रखे जाने की जगह जानता है — कुल्लुन फ़ी किताबिम्-मुबीन — सब एक वाज़ेह किताब में है।'

बेटा, 'मा मिन दाब्बतिन' — **एक भी जानदार नहीं।** ज़मीन के नीचे हर चींटी, सब से गहरी खाई में हर मछली, समंदर के ऊपर हर परिंदा, उस जंगल का हर जानवर जहाँ कोई इंसान कभी गया ही नहीं। **अल्लाह ने उनका रिज़्क़ अपने ज़िम्मे ले रखा है।**

और वो हर एक का 'मुस्तक़र्र' और 'मुस्तौद'अ' जानते हैं — कहाँ वो ठहता है और कहाँ वो रखा जाता है।

बेटा, तो आप आख़िर डर किस चीज़ से रहे हैं? **जो उन मख़्लूक़ात को खिलाते हैं जिनके नाम तक हम नहीं जानते, उसी फ़ेहरिस्त पर आपका नाम भी है।**

नूह, और पानी पर एक बेटा

फिर सूरह अंबिया का जुलूस शुरू करती है, बेटा — और ये सब से ज़्यादा वक़्त नूह (अलैहि0) पर सर्फ़ करती है, क्योंकि उनकी कहानी में वो सब से सख़्त सबक़ है जो एक बाप सीख सकता है।

उन्होंने सदियों अपनी क़ौम को बुलाया। उनके सरदारों ने कहा: '**मा नराक इल्ला बशरम्-मिस्लना** — हम तुम्हें अपने जैसा एक इंसान ही देखते हैं — **व मा नराकत्-तब'अक इल्लल्-लज़ीन हुम अराज़िलुना बादियर्-रअ्य** — और हम तुम्हारी पैरवी करते सिर्फ़ **उन लोगों को** देखते हैं जो **हम में सब से घटिया** हैं, सरसरी नज़र में।'

बेटा, हमेशा वही ए'तिराज़ — कि ग़रीब और मामूली लोग उनके पीछे चले। और उनका जवाब: '**व मा अना बि-तारिदिल्-लज़ीन आमनू — मैं उन्हें धुत्कारने वाला नहीं जो ईमान ले आए — इन्नहुम मुलाक़ू रब्बिहिम** — बेशक, वो अपने रब से मिलने वाले हैं — **व लाकिन्नी अराकुम क़ौमन तज्हलून** — मगर मैं तुम्हें एक नादान क़ौम देखता हूँ।'

'**व या क़ौमि मंय्यन्सुरुनी मिनल्-लाहि इन तरत्तुहुम** — और ऐ मेरी क़ौम, **अगर मैं**

उन्हें धुत्कार दूँ तो अल्लाह से मुझे कौन बचाएगा?'

बेटा, उन से कहा गया: अमीरों और ग़रीबों में से एक चुन लो। और उन्होंने इनकार कर दिया, क्योंकि वो जानते थे कि उन से इस बारे में कौन पूछेगा।

उन्होंने कहा: '**या नूहु क़द जादल्तना फ़-अक्सर्त जिदालना फ़अ्तिना बिमा त'इदुना** — ऐ नूह, तुमने हम से बहस की और बहस बहुत की — **तो ले आओ वो जिसका तुम वादा करते हो।**'

और कश्ती बनाई गई। और उन्होंने उसका मज़ाक़ उड़ाया — एक आदमी सूखी ज़मीन पर जहाज़ बना रहा है। '**व यस्न'उल्-फ़ुल्क व कुल्लमा मर्र 'अलैहि मल-उम्-मिन क़ौमिही सख़िरू मिन्ह** — और जब भी उसकी क़ौम का कोई गिरोह उसके पास से गुज़रता, **वो उसका मज़ाक़ उड़ाता** — **क़ाल इन तस्ख़रू मिन्ना फ़-इन्ना नस्ख़रु मिन्कुम कमा तस्ख़रून** — उसने कहा: **अगर तुम हमारा मज़ाक़ उड़ाते हो, तो हम भी तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाएँगे जैसे तुम उड़ाते हो** — **फ़-सौफ़ तअ्लमून** — **और तुम जान लोगे।**'

बेटा, उस जवाब का सुकून ग़ौर कीजिए। **वो हथौड़ा चलाते रहे।** बेटा, ज़िंदगी में ऐसे वक़्त आते हैं जब सही काम हर देखने वाले को बे-तुका लगता है, **और आप सिर्फ़ इतना कर सकते हैं कि बनाते रहें।**

'**हत्ता इज़ा जा-अ अम्रुना व फ़ारत्-तन्नूर** — यहाँ तक कि जब हमारा हुक्म आया औ र **तन्नूर उबल पड़ा** — **क़ुल्नह्मिल फ़ीहा मिन कुल्लिन ज़ौजैनिस्-नैनि व अह्लक इल्ला मन सबक़ 'अलैहिल्-क़ौलु व मन आमन** — हमने कहा: **उस में हर क़िस्म से दो दो चढ़ा लो, और अपने घरवाले — सिवाए उन के जिन पर बात पहले हो चुकी — और जो ईमान लाया।**'

'**व क़ालर्-कबू फ़ीहा बिस्मिल्-लाहि मज्रेहा व मुर्साहा** — और उसने कहा: **इस में सवार हो जाओ; अल्लाह के नाम से इसका चलना और इसका ठहरना है।**'

बेटा, ये सीख लीजिए: '**बिस्मिल्लाहि मज्रेहा व मुर्साहा**' — किसी भी सफ़र के शुरू में कहने के लिए एक ख़ूबसूरत जुमला।

'**व हिय तज्री बिहिम फ़ी मौजिन कल्-जिबाल** — और वो उन्हें ले कर **पहाड़ों जैसी मौजों** में चलती रही।'

और फिर, बेटा, वो लम्हा जो दिल तोड़ देता है:

'**व नादा नूहुनिब्-नहू व काना फ़ी म'अ्ज़िलिन — और नूह ने अपने बेटे को पुकारा, जो अलग था — या बुनय्यर्-कब्-म'अना व ला तकुम्-म'अल्-काफ़िरीन — ऐ मेरे प्यारे बेटे, हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों के साथ मत हो!**'

बेटा, एक बाप डूबती हुई दुनिया के बीच में, पानी चढ़ रहा है, अपने बेटे को आख़िरी बार सब से नर्म लफ़्ज़ से पुकार रहा है: '**या बुनय्य**'।

'**क़ाल स-आवी इला जबलिंय्यअ्सिमुनी मिनल्-मा** — उसने कहा: **मैं किसी पहाड़ पर पनाह ले लूँगा जो मुझे पानी से बचा लेगा।**'

बेटा, यही है — **एक ज़िंदगी की आख़िरी ग़लती। उसने समझा कि तख़्लीक़ में कहीं अल्लाह के फ़ैसले से कोई पनाह-गाह है।**

'**क़ाल ला 'आसिमल्-यौम मिन अम्रिल्-लाहि इल्ला मर्-रहिम** — उसने कहा: **आज अल्लाह के हुक्म से कोई बचाने वाला नहीं, सिवाए उस के जिस पर वो रहम करे — व हाल बैनहुमल्-मौजु फ़-काना मिनल्-मुग़्रक़ीन — और मौज उन दोनों के दरमियान आ गई, और वो डूबने वालों में से हो गया।**'

बेटा, 'व हाल बैनहुमल्-मौज' — मौज **उन दोनों के दरमियान** आ गई। **एक बाप और उसके बेटे के दरमियान आख़िरी चीज़ पानी की एक दीवार थी, बात के बीच में ही।**

और फिर: '**व क़ील या अर्ज़ुब्ल'ई मा-अकि व या समा-उ अक़्लि'ई — और कहा गया: ऐ ज़मीन, अपना पानी निगल ले; और ऐ आसमान, थम जा — व ग़ीज़ल्-माउ व क़ुज़ियल्-अम्रु वस्तवत 'अलल्-जूदिय्य** — और पानी उतर गया, और मामला पूरा हो गया, और वो (कश्ती) जूदी (पहाड़) पर ठहर गई — **व क़ील बुअ्दल्-लिल्-क़ौमिज़्-ज़ालिमीन** — और कहा गया: **दूर हों ज़ालिम लोग।**'

बेटा, उलमा इन चंद अल्फ़ाज़ में उस मुकम्मल हुक्म पर हैरान हुए हैं: **ज़मीन को मुख़ातिब किया जाता है, आसमान को मुख़ातिब किया जाता है, और तारीख़ का**

सब से बड़ा तूफ़ान एक जुमले में ख़त्म कर दिया जाता है।

वो तेरे घरवालों में से नहीं

और अब, बेटा, वो गुफ़्तगू आती है जो हर वालिद को पढ़नी चाहिए।

'व नादा नूहुर्-रब्बहू फ़-क़ाल रब्बि इन्नब्नी मिन अह्ली व इन्न व'अ्दकल्-हक़्क़ु व अन्त अह्कमुल्-हाकिमीन — और नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा: मेरे रब, बेशक मेरा बेटा मेरे घरवालों में से है, और तेरा वादा सचा है, और तू सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है।'

बेटा, वो अल्लाह को उस वादे की याद दिला रहे थे कि उनके घरवाले बचा लिए जाएँगे।

'क़ाल या नूहु इन्नहू लैस मिन अह्लिक — उसने कहा: ऐ नूह, वो तेरे घरवालों में से नहीं — इन्नहू 'अमलुन ग़ैरु सालिह — बेशक, उसका अमल नेक नहीं।'

बेटा, इसे जज़्ब कीजिए। **ख़ून वो रिश्ता न था जो गिना गया। एक नबी का बेटा, उस क़ौम पर फ़ैसले के दिन, 'घरवाले' में शुमार न हुआ क्योंकि ईमान मौजूद न था।**

'फ़-ला तस्अल्नि मा लैस लक बिही 'इल्म — तो मुझ से वो मत माँग जिसका तुझे इल्म नहीं — इन्नी अ'इज़ुक अन तकून मिनल्-जाहिलीन — बेशक, मैं तुझे नसीहत करता हूँ कि कहीं तू ना-दानों में से न हो जाए।'

और नूह का जवाब देखिए, बेटा — एक ऐसे बंदे का जवाब जिसे उसके रब ने दुरुस्त किया:

'क़ाल रब्बि इन्नी अ'ऊज़ु बिक अन अस्अलक मा लैस ली बिही 'इल्म — मेरे रब, मैं तुझ से पनाह माँगता हूँ कि मैं तुझ से वो माँगूँ जिसका मुझे इल्म नहीं — व इल्ला तग़्फ़िर ली व तर्हम्नी अकुम्-मिनल्-ख़ासिरीन — और अगर तू मुझे न बख़्शे और मुझ पर रहम न करे तो मैं घाटे वालों में से हो जाऊँगा।'

बेटा, **कोई बहस नहीं, कोई सफ़ाई नहीं। फ़ौरन रुजू।**

और बेटा, यहाँ दो सबक़ लीजिए। **पहला**: नेक लोगों से रिश्ता किसी को नहीं बचाता। हम में से हर एक से उसके अपने बारे में पूछा जाएगा।

दूसरा: एक नबी की अपने ही बच्चे के लिए दुआ तक क़ुबूल न हुई, क्योंकि वो अल्लाह की हिकमत के ख़िलाफ़ थी। **तो जब आपकी दुआ रद्द हो, आप बेहतरीन सुहबत में हैं। कभी जवाब यूँ होता है: ये वो नहीं जो तुम समझ रहे हो।**

हूद, सालेह, और शुऐब

फिर सूरह क़ौम दर क़ौम गुज़रती है, बेटा, और हर एक वही अंदाज़ दोहराती है।

'आद को उनके भाई हूद (अलैहि0) ने मुख़ातिब किया: '**या क़ौमिअ्-बुदुल्-लाह मा लकुम मिन इलाहिन ग़ैरुह** — ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की इबादत करो; उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं — **इन अन्तुम इल्ला मुफ़्तरून** — तुम सिर्फ़ झूठ घढ़ने वाले हो।'

और उन्होंने उनसे कहा: '**व या क़ौमिस्-तग़्फ़िरू रब्बकुम सुम्म तूबू इलैहि युर्सिलिस्-समा-अ 'अलैकुम मिद्रारंव्-व यज़िद्कुम क़ुव्वतन इला क़ुव्वतिकुम — अपने रब से माफ़ी माँगो और उस की तरफ़ रुजू करो; वो तुम पर मूसलाधार बारिश भेजेगा और तुम्हारी ताक़त में और ताक़त बढ़ा देगा।**'

बेटा, फिर ग़ौर कीजिए: **इस्तिग़्फ़ार को बारिश और ताक़त से जोड़ा गया।**

उन्होंने उसे अपने ख़ुदाओं के ग़ुस्से से डराया, और उसने क़ुरआन के सब से बे-ख़ौफ़ एलानों में से एक से जवाब दिया: '**इन्नी तवक्कल्तु 'अलल्-लाहि रब्बी व रब्बिकुम — बेशक, मैंने अल्लाह पर भरोसा किया, जो मेरा और तुम्हारा रब है — मा मिन दाब्बतिन इल्ला हुव आख़िज़ुम्-बि-नासियतिहा — कोई जानदार ऐसा नहीं जिसे उसने उसकी पेशानी से न पकड़ रखा हो — इन्न रब्बी 'अला सिरातिम्-मुस्तक़ीम** — बेशक, मेरा रब सीधे रास्ते पर है।'

बेटा, 'आख़िज़ुम्-बि-नासियतिहा' — **हर मख़्लूक़ को पेशानी से, सर के आगे के बालों से पकड़े हुए।** ये मुकम्मल क़ाबू की गिरफ़्त है। वो कह रहा था: **तुम में से हर एक जो मुझे धमका रहा है, उसे मेरे रब ने सर से पकड़ रखा है।**

फिर **समूद** और उनके भाई सालेह (अलैहि0), और वो ऊँटनी जो एक निशानी थी, और उनका उसे काट डालना — और तंबीह: '**तमत्त'ऊ फ़ी दारिकुम सलासत अय्यामिन** — अपने घरों में **तीन दिन** फ़ायदा उठा लो — **ज़ालिक व'अ्दुन ग़ैरु मक्ज़ूब** — ये एक ऐसा वादा है जो झुठलाया न जाएगा।'

फिर मेहमान इब्राहीम (अलैहि0) के पास आए, और वो जल्दी से एक भुना हुआ बछड़ा ले आए — बेटा, मेहमान-नवाज़ी का अदब ग़ौर कीजिए: **उन्होंने पूछा नहीं कि खाना चाहिए या नहीं; वो ले आए।** और जब उन्होंने न खाया, वो बे-चैन हुए, और उन्होंने इस्हाक़ की, और इस्हाक़ के बाद याक़ूब की ख़ुशख़बरी दी।

और उनकी बीवी हँसी और अपने बुढ़ापे पर हैरत की, और फ़रिश्तों ने कहा: '**अ तअ्जबीन मिन अम्रिल्-लाह — क्या तुम अल्लाह के हुक्म पर हैरान होती हो? रहमतुल्-लाहि व बरकातुहू 'अलैकुम अह्लल्-बैत** — अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें तुम पर हों, **ऐ घरवालो।**'

फिर लूत (अलैहि0), और उनके मेहमानों पर उनकी परेशानी: '**हाज़ा यौमुन 'असीब**' — ये एक सख़्त दिन है। और उनकी पुकार: '**लौ अन्न ली बिकुम क़ुव्वतन औ आवी इला रुक्निन शदीद — काश मेरे पास तुम्हारे मुक़ाबले में कोई ताक़त होती या मैं किसी मज़बूत सहारे की पनाह ले सकता।**'

बेटा, और नबी ﷺ ने इस पर रहमत से फ़रमाया: अल्लाह लूत पर रहम करे; वो एक मज़बूत सहारे की पनाह ढूँढ रहे थे — यानी अल्लाह की — जब कि उनके अपने मेहमान फ़रिश्ते थे।

और फिर **मदयन** और उनके भाई शुऐब (अलैहि0), जिनकी फ़िक्र ईमानदार तिजारत थी: '**व ला तन्क़ुसुल्-मिक्याल वल्-मीज़ान** — नाप और तराज़ू में कमी मत करो — **इन्नी अराकुम बि-ख़ैर — बेशक, मैं तुम्हें ख़ुश-हाली में देखता हूँ।**'

बेटा, इसे ग़ौर कीजिए: **उन्होंने उन्हें तब ख़बरदार किया जब वो अच्छा कमा रहे थे। बे-ईमानी उन्हें अमीर बना रही थी, और उन्होंने कहा कि यही उन्हें तबाह कर देगी।**

उन्होंने मज़ाक़ उड़ाया: '**अ सलातुक तअ्मुरुक अन नत्रुक मा यअ्बुदु आबाउना औ अन नफ़्'अल फ़ी अम्वालिना मा नशा — क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें हुक्म देती है कि**

हम वो छोड़ दें जिसे हमारे बाप-दादा पूजते थे, या ये कि हम अपने माल में जो चाहें ना करें?'

बेटा, उस ए'तिराज़ को सुनिए, क्योंकि ये हर दौर का ए'तिराज़ है: **मेरे पैसे से दीन का क्या ताल्लुक़?**

और उनका जवाब, बेटा, एक ऐसा जुमला है जिस पर ज़िंदगी बनाई जा सकती है: '**इन उरीदु इल्लल्-इस्लाह मस्तत'अ्त — मैं सिर्फ़ इस्लाह चाहता हूँ जितनी मेरी ताक़त है — व मा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाह — और मेरी कामयाबी सिर्फ़ अल्लाह से है — 'अलैहि तवक्कल्तु व इलैहि उनीब — उसी पर मैंने भरोसा किया, और उसी की तरफ़ रुजू करता हूँ।**'

बेटा, इसे याद कर लीजिए। '**मैं सिर्फ़ इस्लाह चाहता हूँ जितनी मेरी ताक़त है**' — आप से हर चीज़ ठीक करने का मुतालबा नहीं, सिर्फ़ अपनी गुंजाइश में कोशिश का। और '**व मा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाह**' — जो भी कामयाब हुआ, अल्लाह से हुआ, आपकी चतुराई से नहीं।

काश कुछ भलाई वाले होते

और फिर, बेटा, इन तमाम तबाह-शुदा क़ौमों के बाद, अल्लाह एक ऐसी तशख़ीस देते हैं जो समझाती है कि एक मुआशरा क्यों गिरता है — और वो वो नहीं जो ज़्यादा तर लोग अंदाज़ा लगाएँगे।

'**फ़-लौला काना मिनल्-क़ुरूनि मिन क़ब्लिकुम उलू बक़िय्यतिंय्यन्हौन 'अनिल्-फ़सादि फ़िल्-अर्ज़ — तो तुम से पहले की नस्लों में ऐसे भलाई वाले लोग क्यों न हुए जो ज़मीन में फ़साद से रोकते — इल्ला क़लीलम्-मिम्मन अन्जैना मिन्हुम — सिवाए थोड़े से उन के जिन्हें हमने उन में से बचा लिया?**'

बेटा, '**उलू बक़िय्यह**' — बाक़ी रहने वाले, भलाई वाले लोग; और उनका बयान किया गया काम है 'यन्हौन 'अनिल्-फ़साद', **फ़साद से रोकना।**

तो आयत कह रही है: **वो क़ौमें सिर्फ़ इस लिए नहीं गिरीं कि उन में फ़सादी लोग थे, बल्कि इस लिए कि उन में फ़साद के ख़िलाफ़ खड़े होने वाले काफ़ी न थे।**

बेटा, ये एक भारी ख़याल है। **बुराई को बहुत से हिस्सा लेने वालों की ज़रूरत नहीं होती; उसे बहुत से तमाशाई चाहिए होते हैं।**

'**वत्तब'अल्-लज़ीन ज़लमू मा उत्रिफ़ू फ़ीहि व कानू मुज्रिमीन** — मगर जिन्होंने ज़ुल्म किया वो **उस ऐश के पीछे** पड़े जो उन्हें दिया गया था, और वो मुजरिम थे।'

और फिर एक रहमत वाला उसूल, बेटा: '**व मा काना रब्बुक लि-युह्लिकल्-क़ुरा बि-ज़ुल्मिंव्-व अह्लुहा मुस्लिहून — और तेरा रब बस्तियों को ज़ुल्म से तबाह करने वाला न था जब कि उनके लोग इस्लाह करने वाले हों।**'

बेटा, ग़ौर कीजिए: **एक ऐसा मुआशरा जिसमें लोग अमली तौर पर इस्लाह कर रहे हों, वो महफ़ूज़ है। वही चंद लोग बाक़ी सब के बच जाने की वजह होते हैं।**

'**व लौ शा-अ रब्बुक ल-ज'अलन्-नास उम्मतंव्-वाहिदह** — और अगर तेरा रब चाहता तो तमाम इंसानों को **एक ही उम्मत** बना देता — **व ला यज़ालून मुख़्तलिफ़ीन — मगर वो इख़्तिलाफ़ करते ही रहेंगे — इल्ला मर्-रहिम रब्बुक** — सिवाए उन के जिन पर तेरे रब ने रहम किया।'

बेटा, इंसानी इख़्तिलाफ़ को यहाँ इस दुनिया की एक मुस्तक़िल ख़ासियत बताया गया है। **तो ये हैरत छोड़ दीजिए कि लोग इख़्तिलाफ़ करते हैं; इस पर काम कीजिए कि आप उन में से हों जिन पर रहम हुआ।**

जो एक दिल को ठहराता है

और फिर, बेटा, अल्लाह अपने रसूल ﷺ को ठीक ठीक बताते हैं कि ये सारी कहानियाँ उन्हें **क्यों** सुनाई गईं:

'**व कुल्लन नक़ुस्सु 'अलैक मिन अम्बा-इर्-रुसुलि मा नुसब्बितु बिही फ़ुआदक — और रसूलों की ख़बरों में से हर वो चीज़ हम तुम्हें सुनाते हैं जिस से हम तुम्हारा दिल मज़बूत करते हैं — व जा-अक फ़ी हाज़िहिल्-हक़्क़ु व मौ'इज़तुंव्-व ज़िक्रा लिल्-मुअ्मिनीन** — और इस में तुम्हारे पास हक़ आया, और मोमिनीन के लिए नसीहत और याद-दिहानी।'

बेटा, यही क़ुरआन की हर कहानी का मक़्सद है। **दिल-लगी नहीं, ख़ाली तारीख़ नहीं — 'नुसब्बितु बिही फ़ुआदक', तुम्हारा दिल ठहराने के लिए।**

उन पर ज़ुल्म हो रहा था, और अल्लाह ने उन्हें लश्कर नहीं भेजा। **उन्होंने कहानियाँ भेजीं** — नूह की जिस पर कश्ती बनाते हुए हँसा गया, हूद की जो अकेला खड़ा रहा, लूत की जिसका कोई सहारा न था, शुऐब की जिसका मज़ाक़ उड़ाया गया कि दीन को कारोबार में क्यों लाते हो। **और हर एक ने कहा: तुम पहले नहीं हो, और अंजाम मालूम है।**

बेटा, इसी लिए हम भी ये बयानात पढ़ते हैं। जब आप अपने दफ़्तर में अकेले वो शख़्स हों जो बे-ईमानी का काम न करे, या अपने ख़ानदान में अकेले जो नमाज़ थामे हुए हो — **ये कहानियाँ आपके कंधे पर ठहराने वाला हाथ हैं।**

'**व क़ुल लिल्लज़ीन ला युअ्मिनूनअ्-मलू 'अला मकानतिकुम इन्ना 'आमिलून** — और उन से कहो जो ईमान नहीं लाते: **अपनी जगह पर काम करते रहो; हम भी काम कर रहे हैं।**'

'**व लिल्लाहि ग़ैबुस्-समावाति वल्-अर्ज़ि व इलैहि युर्जउल्-अम्रु कुल्लुहू** — और आसमानों और ज़मीन का ग़ैब अल्लाह ही का है, और उसी की तरफ़ सारा मामला लौटाया जाएगा — **फ़अ्बुद्हु व तवक्कल 'अलैह** — **तो उसी की इबादत करो और उसी पर भरोसा करो** — **व मा रब्बुक बि-ग़ाफ़िलिन 'अम्मा तअ्मलून** — और तुम्हारा रब उस से ग़ाफ़िल नहीं जो तुम करते हो।'

सीधे रहो जैसे हुक्म दिया गया

और अब, बेटा, हम उस आयत तक पहुँचे जिसे रिवायात आपके ﷺ बालों के सफ़ेद होने से जोड़ती हैं:

'**फ़स्तक़िम कमा उमिर्त व मन ताब म'अक व ला तत्ग़ौ** — **तो सीधे रास्ते पर क़ायम रहो जैसे तुम्हें हुक्म दिया गया — तुम और वो भी जो तुम्हारे साथ लौट आए — और हद से मत बढ़ो** — **इन्नहू बिमा तअ्मलून बसीर** — बेशक, वो देखने वाला है जो तुम करते हो।'

बेटा, ये आयत उन पर इतनी भारी क्यों पड़ी?

'**कमा उमिर्तं**' की वजह से — **जैसे तुम्हें हुक्म दिया गया**। 'जितना तुम सँभाल सको' नहीं। 'तक़रीबन उस सिम्त में' नहीं। **ठीक वैसे जैसे हुक्म दिया गया — एक ऐसी सीधाई जिसमें ज़र्रा भर भी टेढ़ा-पन न हो।**

और '**व मन ताब म'अक**' की वजह से — **और वो जो तुम्हारे साथ हैं।** उन्हें सिर्फ़ अपनी सीधाई का नहीं, बल्कि हर उस शख़्स के ठहराव का भी ज़िम्मेदार बनाया गया जो उनके पीछे चला।

बेटा, और वो ज़िम्मेदारी आप तक भी उतरती है: **एक बाप अपने घराने की सीधाई का ज़िम्मेदार है, एक उस्ताद अपने शागिर्दों का, एक बड़ा भाई छोटों का।** ये वो बोझ है जिस पर नींद उड़ जानी चाहिए।

और फिर एक तंबीह जो कारोबार में हर शख़्स को सोचने पर मजबूर कर देनी चाहिए: '**व ला तर्कनू इलल्-लज़ीन ज़लमू फ़-तमस्सकुमुन्-नार — और ज़ालिमों की तरफ़ मत झुको, वरना तुम्हें आग छू लेगी।**'

बेटा, 'ला तर्कनू' — उन की तरफ़ **झुको** तक नहीं। 'उन जैसा मत बन जाओ' नहीं — **झुको तक नहीं, उनकी रज़ामंदी मत ढूँढो, अपना मुक़ाम उनके ज़ुल्म पर मत खड़ा करो, उनकी ज़्यादती के साथ इस लिए आराम-देह मत हो जाओ कि उस से तुम्हें फ़ायदा होता है।**

और फिर, बेटा, क़ुरआन की सब से हौसला देने वाली आयतों में से एक:

'**व अक़िमिस्-सलात तरफ़यिन्-नहारि व ज़ुलफ़म्-मिनल्-लैल — और दिन के दोनों किनारों पर और रात की कुछ घड़ियों में नमाज़ क़ायम करो — इन्नल्-हसनाति युज़्हिब्नस्-सय्यिआत — बेशक, नेकियाँ बुराइयों को मिटा देती हैं — ज़ालिक ज़िक्रा लिज़्-ज़ाकिरीन** — ये नसीहत लेने वालों के लिए एक नसीहत है।'

बेटा, रिवायत है कि एक आदमी नबी ﷺ के पास आया जिस से एक गुनाह हो गया था और उसने सज़ा माँगी। और जब नमाज़ हो गई, उसने अपनी सज़ा के बारे में पूछा, और नबी ﷺ ने फ़रमाया कि उसने अभी उनके साथ नमाज़ पढ़ी है, और ये आयत

नाज़िल हुई। और जब पूछा गया कि क्या ये सिर्फ़ उसी आदमी के लिए है, आपने फ़रमाया: **मेरी पूरी उम्मत के लिए।**

बेटा, इसे थामे रखिए। **आपकी हर नमाज़ कुछ न कुछ धो रही है। हर नेकी एक रबर है। आप सिर्फ़ जमा नहीं कर रहे — आप साफ़ भी कर रहे हैं।**

'**वस्बिर फ़-इन्नल्-लाह ला युज़ी'उ अज्रल्-मुह्सिनीन** — **और सब्र करो, बेशक अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र ज़ाया नहीं करते।**'

और सूरह ख़त्म होती है, बेटा, हर चीज़ के ख़ुलासे के साथ: '**व लिल्लाहि ग़ैबुस्-समावाति वल्-अर्ज़ि व इलैहि युर्जा'उल्-अम्रु कुल्लुहू फ़अ्बुद्हु व तवक्कल 'अलैह** — उसी की इबादत करो और उसी पर भरोसा करो — **व मा रब्बुक बि-ग़ाफ़िलिन 'अम्मा तअ्मलून**।'

बेटा, तो वो सूरह जिसने मख़्लूक़ में सब से बेहतर को सफ़ेद कर दिया, तीन हिदायतों पर ख़त्म होती है: **सीधे खड़े रहो, नमाज़ पढ़ो** (क्योंकि तुम्हारी नेकियाँ तुम्हारी बुराइयाँ मिटा रही हैं), **और सब्र करो** (क्योंकि तुम्हारी कोई भी भलाई कभी ज़ाया नहीं होती)।

और दरमियान में इसने आपको बताया: **ज़मीन पर कोई जानदार बिना रिज़्क़ नहीं छोड़ा गया, कोई पहाड़ किसी को उसके फ़ैसले से पनाह नहीं देता, ख़ून का रिश्ता किसी को नहीं बचाता, एक क़ौम तब गिरती है जब उसके फ़साद के ख़िलाफ़ कोई खड़ा न हो, और इस किताब की हर कहानी आपका दिल ठहराने के लिए सुनाई गई।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. ज़मीन पर एक भी जानदार बिना रिज़्क़ के नहीं छोड़ा गया — और वो जानता है हर एक कहाँ ठहता और कहाँ रखा जाता है।

2. कभी सही काम हर देखने वाले को बे-तुका लगता है; कश्ती बनाते रहिए।

3. कोई पहाड़ ऐसा नहीं जो किसी को अल्लाह के फ़ैसले से पनाह दे।

4. ख़ून का रिश्ता किसी को नहीं बचाता — एक नबी की अपने बेटे के लिए दुआ

का जवाब भी 'वो तेरे घरवालों में से नहीं' था।

5. 'मैं सिर्फ़ इस्लाह चाहता हूँ जितनी मेरी ताक़त है, और मेरी कामयाबी सिर्फ़ अल्लाह से है।'

6. क़ौमें फ़सादियों की वजह से नहीं गिरतीं, बल्कि इस लिए कि उन के ख़िलाफ़ खड़े होने वाले बहुत कम थे — और जिस बस्ती में इस्लाह करने वाले हों वो महफ़ूज़ है।

7. सीधे रहो जैसे हुक्म दिया गया, ज़ालिमों की तरफ़ झुको तक नहीं, और जानो कि तुम्हारी नेकियाँ तुम्हारी बुराइयाँ मिटा रही हैं।

या अल्लाह, हमें वैसे सीधा रखिए जैसे आपने हुक्म दिया, हमारी नेकियों से हमारे गुनाह मिटा दीजिए, और हमारे दिल ठहरा दीजिए। आमीन।